सेमिनोल डायरी

एक गुलाम की यादें

डोलोरेस जॉनसन

सेमिनोल डायरी
एक गुलाम की यादें
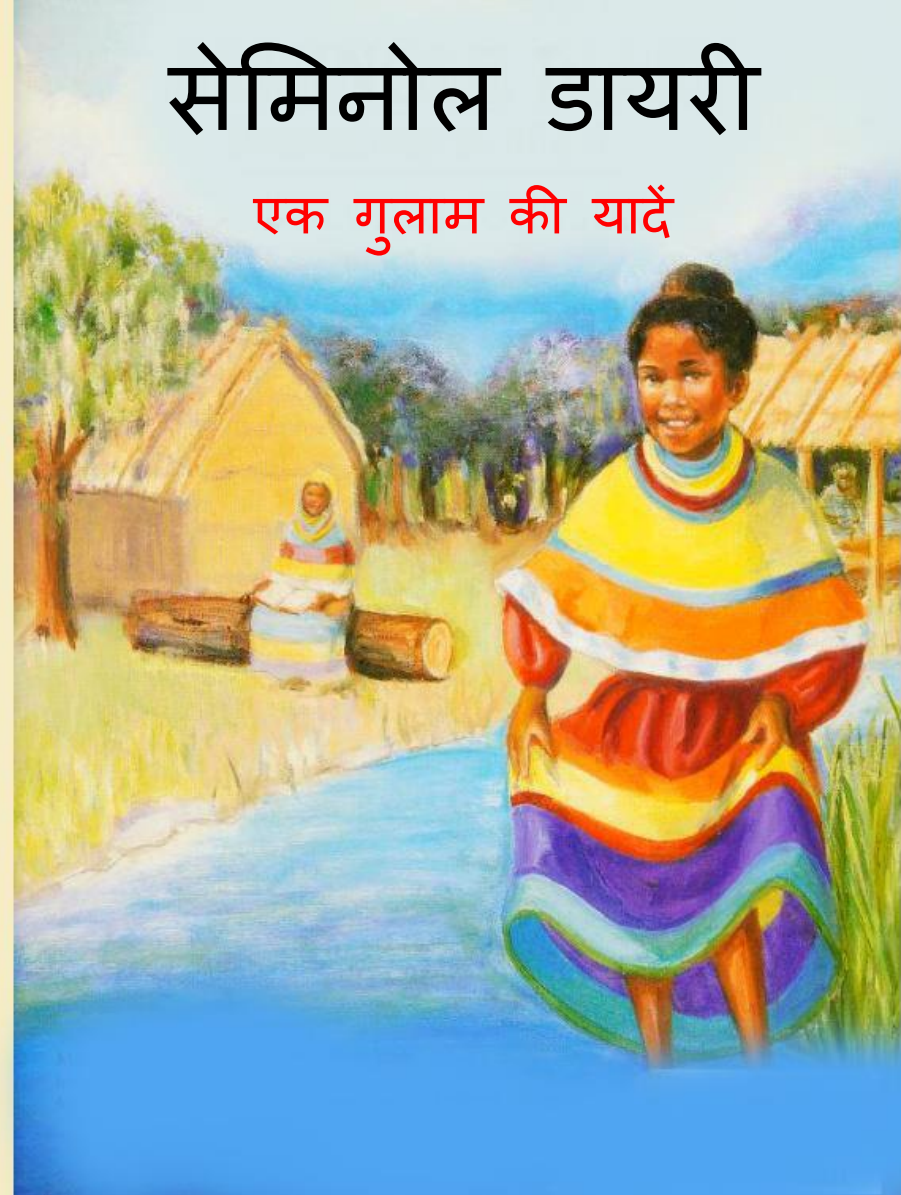
मास्टर इवांस ने मुझे बहुत बुरी तरह से पीटा. मुझे लगा कि पापा को बहुत चोट लगी होगी. वो बहुत गुस्से में थे. उन्होंने मुझसे कहा, "लिब्बी, हम अब यहाँ और नहीं रह सकते. हम इस बड़े फार्म से भागने वाले अन्य दासों में शामिल हो जायेंगे. हम आज रात अपनी आजादी के लिए यहाँ से पलायन करेंगे."

और उन्होंने वही किया - लिब्बी, उसके पिता, उसकी छोटी बहन क्लेरिसा, और बागान के कुछ अन्य दास, दक्षिण की ओर भाग निकले. एक रात सेमिनोल समुदाय का एक दल उनके शिविर में आया. उन्होंने उन्हें पीने को ताजा पानी दिया और उनके कीड़ों द्वारा काटे ज़ख्मों के लिए मलहम दिया. लिब्बी के पिता चीफ रनिंग टाइगर से मिले, और बाद में उन्होंने लिब्बी को समझाया, "सेमिनोल लोग हमारा इंसानों जैसे सम्मान करते हैं. उनके मुखिया के अनुसार अगर हम उनके गुलाम बन जाते हैं, तो फिर गुलाम पकड़ने वाले सिपाही यहाँ आने की और हमें पकड़ने की हिम्मत नहीं करेंगे."

फिर लिब्बी, उसके पिता और बहन सेमिनोल उन लोगों के गांव में चले गए. वहां उन्होंने सेमिनोल जनजाति के सदस्यों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया, उन्हें करीबी से जाना, और उनके पर्वों में भाग लिया. लेकिन वो अच्छा जीवन अधिक टिकने वाला नहीं था, क्योंकि गोरे लोग, सेमिनोल जनजाति की भूमि को छीनना चाहते थे. फिर उन्हें एक दर्दनाक निर्णय लेना पड़ा: क्या उन्हें दक्षिण की ओर भाग जाना चाहिए, दक्षिण फ्लोरिडा के दलदलों में, या फिर उन्हें गोरे लोगों के कहे अनुसार ओक्लाहोमा में शिफ्ट होना चाहिए?

उस निर्णय के दर्द ने सेमिनोल लोगों और गुलामों दोनों को, समान रूप से प्रभावित किया.

सेमिनोल डायरी

एक गुलाम की यादें

जीना ने अपनी माँ को अटारी में बैठे हुए पाया. वो एक खुले बड़े संदूक के पास बैठी थीं. उनके पैरों के पास फर्श पर बिखरी हुई पेंटिंग, एक पुरानी घड़ी, एक पंख, पुआल की बनी टोकरियाँ और चमकीली पोशाक पहने एक गुड़िया थी. जब जीना अटारी में दाखिल हुई तब माँ ने उसकी ओर देखा तक नहीं क्योंकि वो चमड़े से मढ़ी एक पुरानी किताब पढ़ने में इतनी व्यस्त थीं.

"वो क्या है माँ?" जीना ने पूछा और उसने गुड़िया को फर्श से उठाया.

जीना की माँ ने अपनी बेटी की ओर देखा और वो मुस्कुरा दीं. "यह एक उपहार है. यह हमारे पूर्वजों द्वारा दिया गया एक उपहार है जो हमें बहुत पहले सौंपा गया था."

"किस पूर्वज द्वारा?" जीना ने पूछा.

"इसे लिब्बी नाम की एक गुलाम ने दिया था. हम सब भाग्यशाली हैं कि वो पढ़ और लिख सकती थी, क्योंकि तभी वो हमारे लिए यह खजाना छोड़ पाई. मैं इन मोतियों, इन टोकरियों या इन चित्रों के बारे में बात नहीं कर रही हूँ. लिब्बी ने हमारे लिए वो कीमती यादें छोड़ी हैं जो उसने इस किताब में लिखी हैं. उसने उसमें एक ऐसे समय का रिकॉर्ड दर्ज़ किया है जब लोगों के दो समूहों के बीच में एक विशेष संबंध था. यह एक ऐसी कहानी है जो शायद पहले कभी नहीं सुनाई गई होगी."

"मेरे लिए उसे पढ़ें, माँ," जीना ने कहा. मैं वो कहानी सुनना चाहती हूं."

फिर जीना की माँ ने किताब खोली और वो उसे पढ़ने लगी.
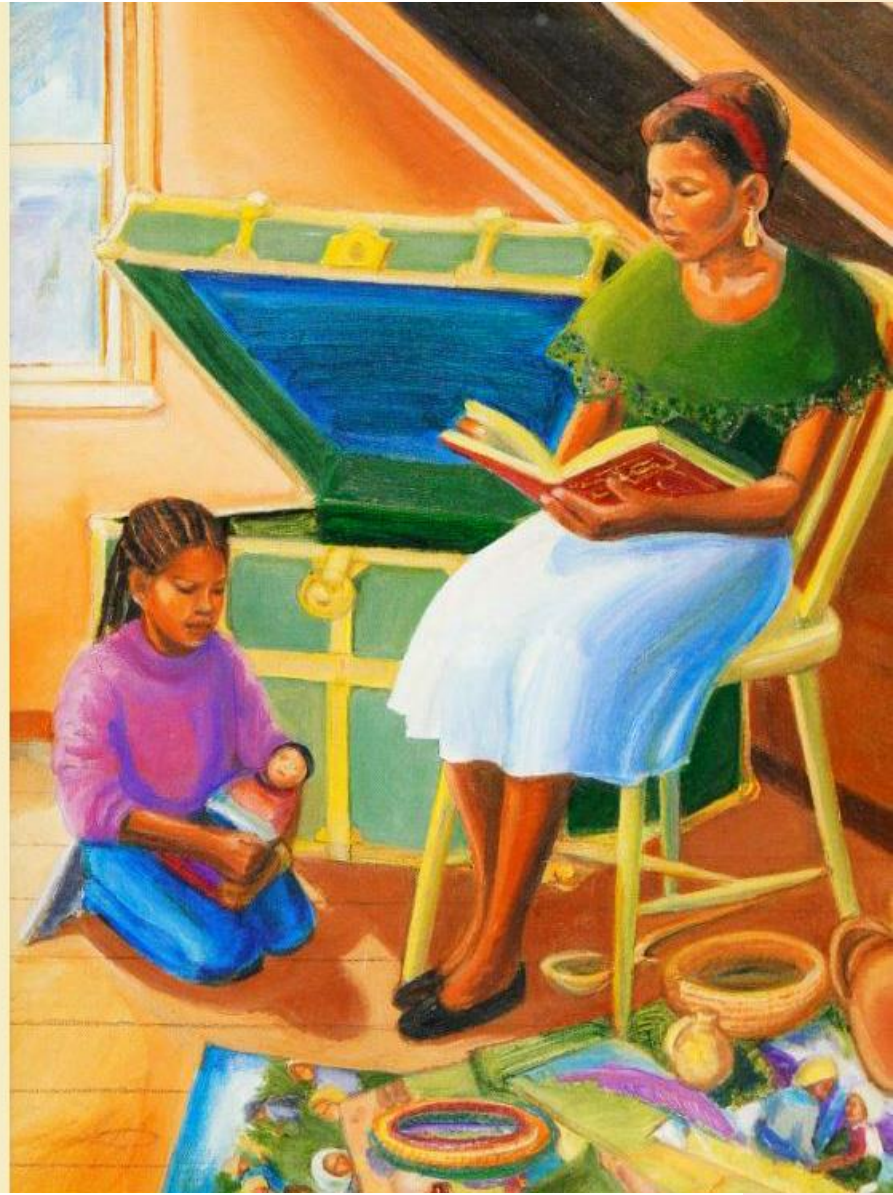
गुरुवार, 13 मार्च, 1834

मास्टर इवांस ने मुझे बहुत बुरी तरह से पीटा. मुझे लगा कि पापा को बहुत चोट लगी होगी. वो बहुत गुस्से में थे. उन्होंने मुझसे कहा, "लिब्बी, हम यहाँ और नहीं रह सकते हैं. हम इस बड़े फार्म से भागने वाले अन्य दासों में शामिल हो जायेंगे. हम आज रात अपनी आजादी के लिए यहाँ से पलायन करेंगे."

मंगलवार, 1 अप्रैल, 1334

अंत में, हम एक विश्राम स्थल पर पहुँचे. हमने रात-दिन यात्रा की थी. हम में से दस लोग, घने जंगलों में रेंगते हुए और घुटने तक गहराई वाले दलदल को रौंदते हुए आगे बढ़े थे. कभी-कभी मैंने पापा से विनती की कि वो हमें वापस लौट जाने दें. लेकिन उन्होंने कहा, "मेरी लड़कियां अब एक भी दिन गुलामों के रूप में नहीं जिएंगी. मैं एक मनुष्य हूं, और मैं एक इंसान जैसे जीना चाहता हूँ!"

लेकिन क्लेरिसा बड़ी नहीं है. वो केवल सात साल की है. और मेरी उम्र भी इतनी ज़्यादा नहीं है. और मैं हर कदम पर और अधिक गंदी, थकी और भूखी हो जाती हूं. जब आप यह भी नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं, तो चलते रहना और अधिक मुश्किल हो जाता है. और हम लोग दक्षिण की ओर क्यों जा रहे थे जबकि हर कोई जानता था कि आपको स्वतंत्रता के लिए, ध्रुव-तारे (नॉर्थ-स्टार) का पीछा करना चाहिए. शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि पापा को लगता है कि क्लेरिसा, पेन्सिलवेनिया तक की दूरी चल नहीं पायेगी. वो निश्चित रूप से मेरी वजह से नहीं था.

अब मुझे जाना ही होगा. मैंने दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनी है. वो गुलाम शिकारी भी हो सकते हैं. भगवान हम सब की रक्षा करें.
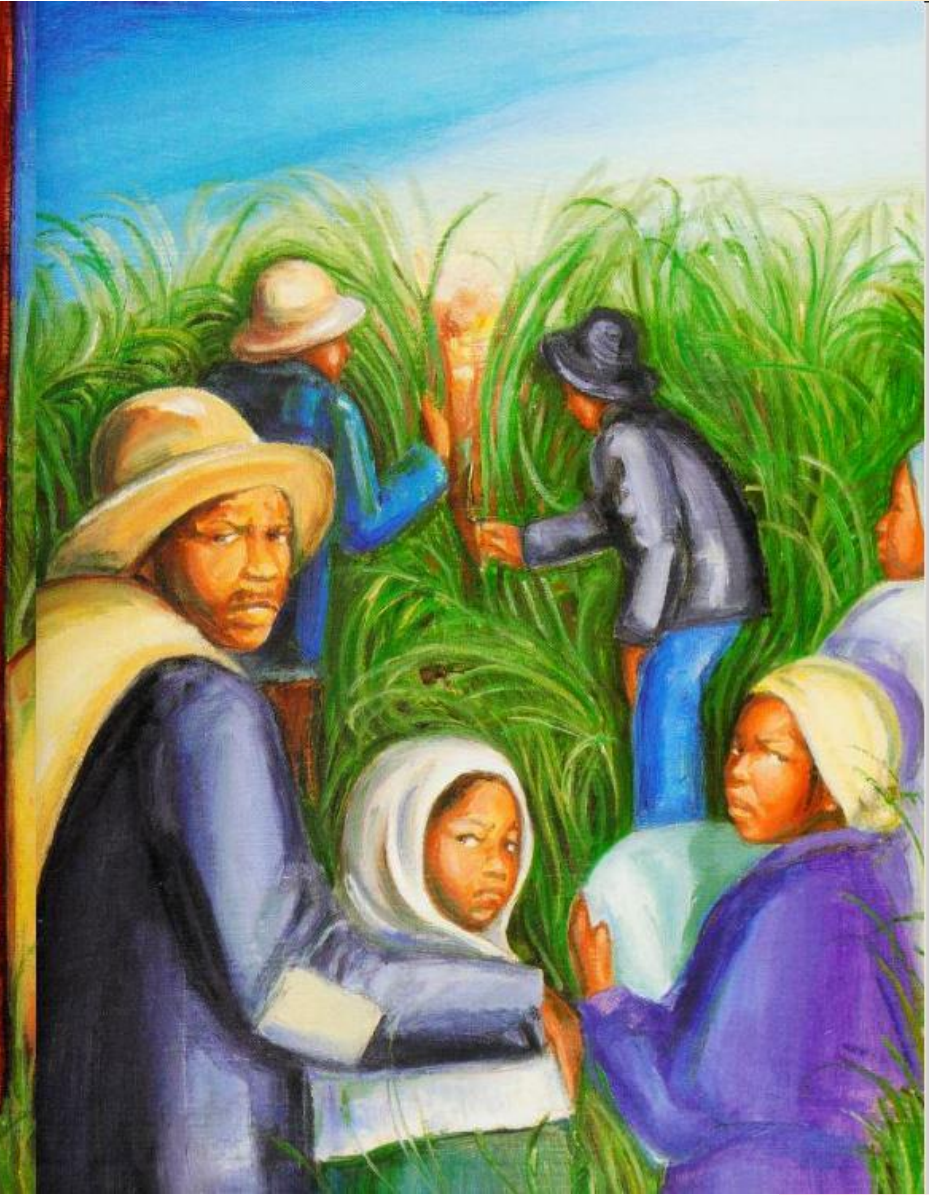
रविवार, 13 अप्रैल, 1834

मैं केवल अनुमान ही लगा सकती हूं कि आज कौन सा दिन होगा, और मुझे यह भी नहीं पता कि मैं कहाँ पर हूँ. मैं केवल उन चीजों के बारे में सोचती हूं जो मुझे याद आती हैं - खाना पकाने की खुशबू, खाने की मेज के चारों ओर हंसने और बातें करने की आवाजें, और हर रात एक ही स्थान पर अपना सिर रखकर सोना.

क्लेरिसा उम्मीद से अच्छा कर रही है. मुझ से भी अच्छा. ऐसा लगता है जैसे उसने भागने की योजना बनाई हो! उसने नदी के पास मुझसे कुछ कहा, बहुत हल्के से ताकि कोई उसे सुन न सके. वो फुसफुसाई, "अब ज्यादा देर नहीं लगेगी." उसे यह कैसे पता चला?
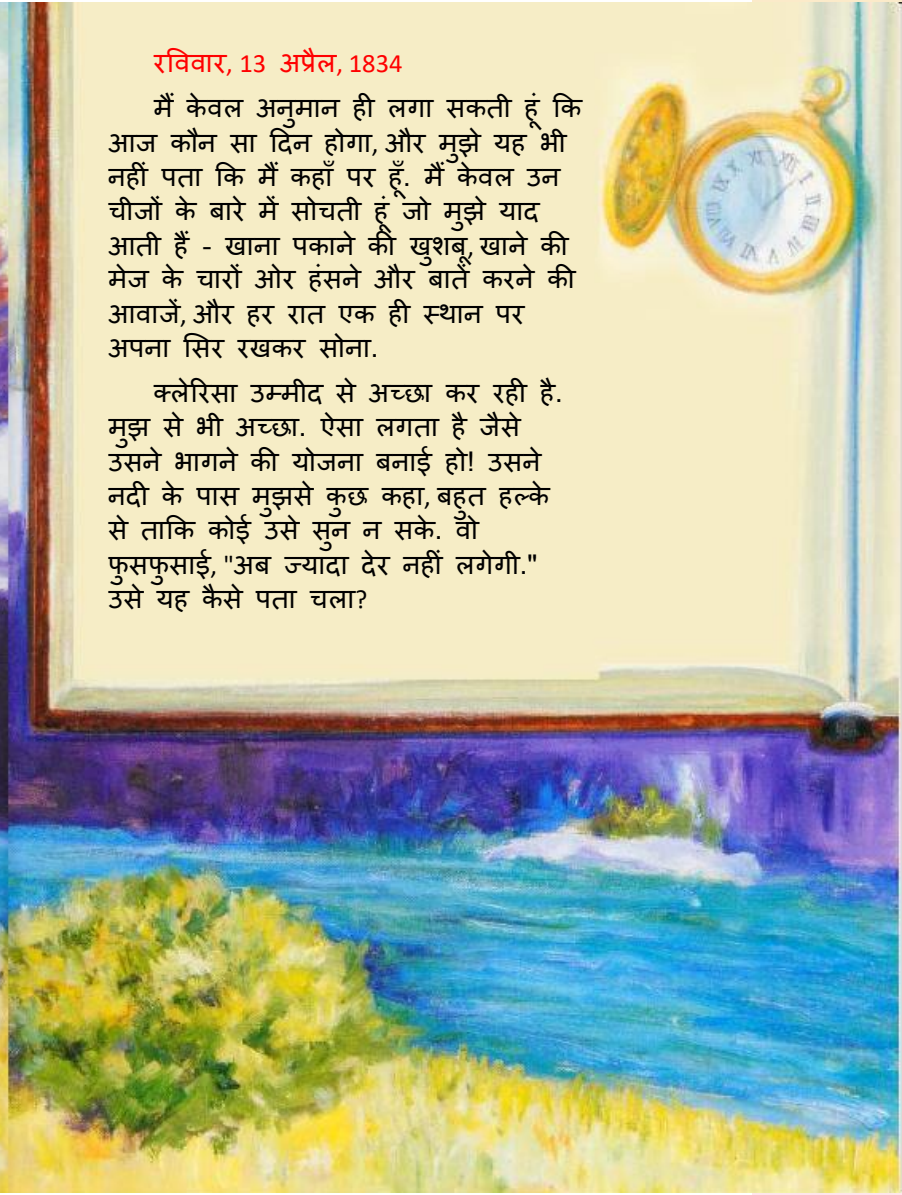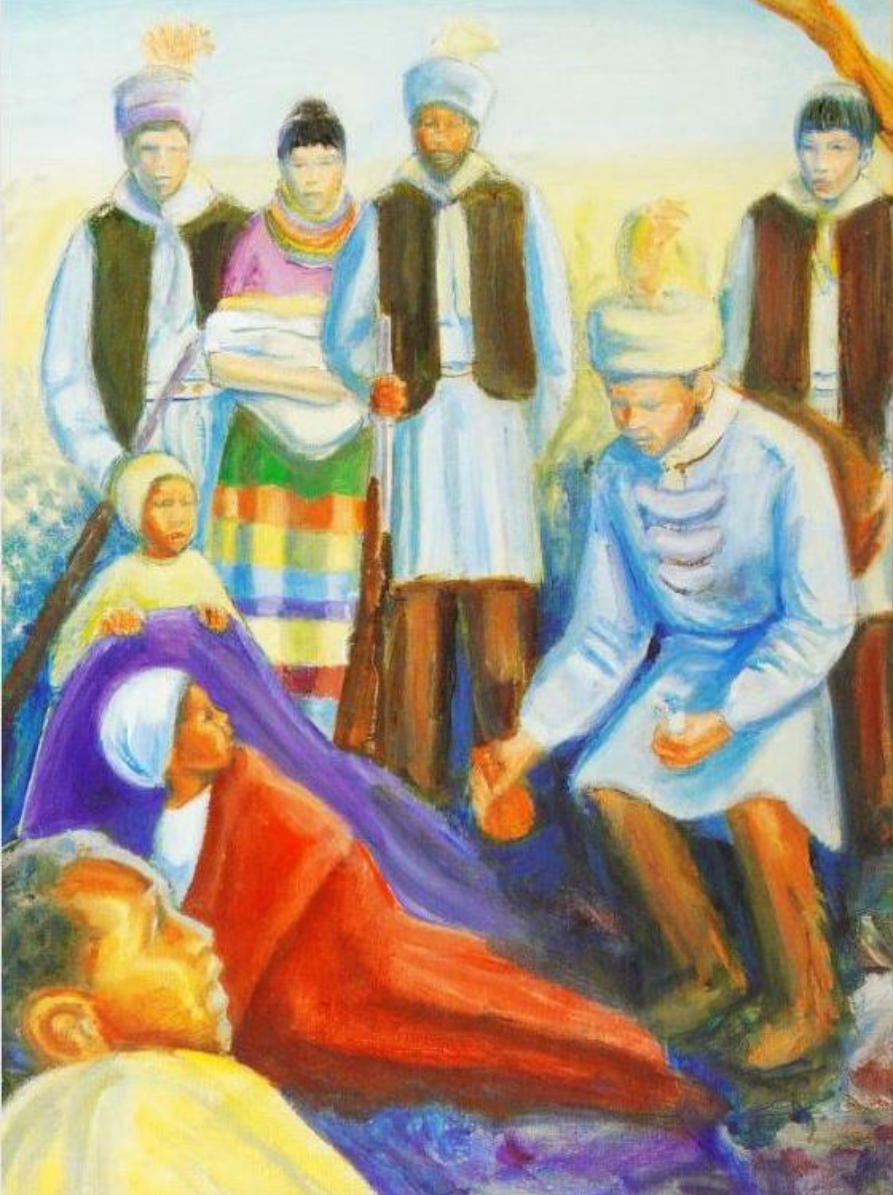
सोमवार, 14 अप्रैल, 1834

वे बिल्लियों की तरह चुपके से हमारी कैंपसाइट में आए. वे देखने में बहुत सुंदर थे, यहाँ तक कि उनके पुरुष भी, उनकी त्वचा अखरोट के रंग की थी और वे पंख, मोती और चांदी से जड़े कपड़े पहने थे. उन्होंने अपने थैले से सूखा मांस निकाला और हमें खाने को दिया. उन्होंने कीड़ों के काटे ज़ख्मों पर लगाने के लिए हमें मलहम भी दिया. उन्होंने हमें पीने के लिए और चेहरों को धोने के लिए ताजा पानी दिया.

फिर उन्हीं की तरह कपड़े पहने एक काला आदमी आगे आया और उसने पापा से कहा, "मेरा नाम सिलास है. ये लोग सेमिनोल इंडियंस हैं. आप सभी हमारे जैसे रह सकते हैं. वे आपको खेती के लिए जमीन देंगे, और आप जो कुछ भी फसल उगाएंगे उसका अधिकांश हिस्सा आप खुद ही रख पाएंगे. इंडियंस आप सभी की रक्षा करेंगे और आपका इलाज करेंगे. वो आप लोगों के साथ भाई जैसा सलूक करेंगे भले ही आप उनके गुलाम हों." हमने उनका पीछा किया.

मंगलवार, 15 अप्रैल, 1834

पापा हमारे समूह के नेता के रूप में, उस बस्ती के सेमिनोल नेता से मिले. उसका नाम चीफ रनिंग टाइगर था, और पापा को लगा है कि उसकी त्वचा का रंग बहुत गोरा था.

"लिबी," पापा ने मुझसे कहा. उनकी आँखें बड़ी-बड़ी और चमकीली लग रही थीं. "देखो, सेमिनोल लोग हमारा मनुष्यों जैसे सम्मान करते हैं. परन्तु उनके नेता कहते हैं कि यदि हम उनके गुलाम बन जाते हैं, तो दास पकड़नेवाले, हमें यहाँ से ले जाने की हिम्मत नहीं करेंगे."

"यह दक्षिण में रहने के लिए हमारे लिए सबसे सुरक्षित जगह होगी, लिब्बी. मैंने उनका बहुत आभारी प्रगट किया और, मैंने प्रमुख को वो हर छोटी-छोटी बात बताई जो मैं जानता था. शायद मेरी चेतावनी हम सभी को उन सैनिकों और बसने वाले गोरे सेटलर्स से सुरक्षित रहने में मदद करेगी जो इस ज़मीन को चुराने की कोशिश कर रहे हैं."
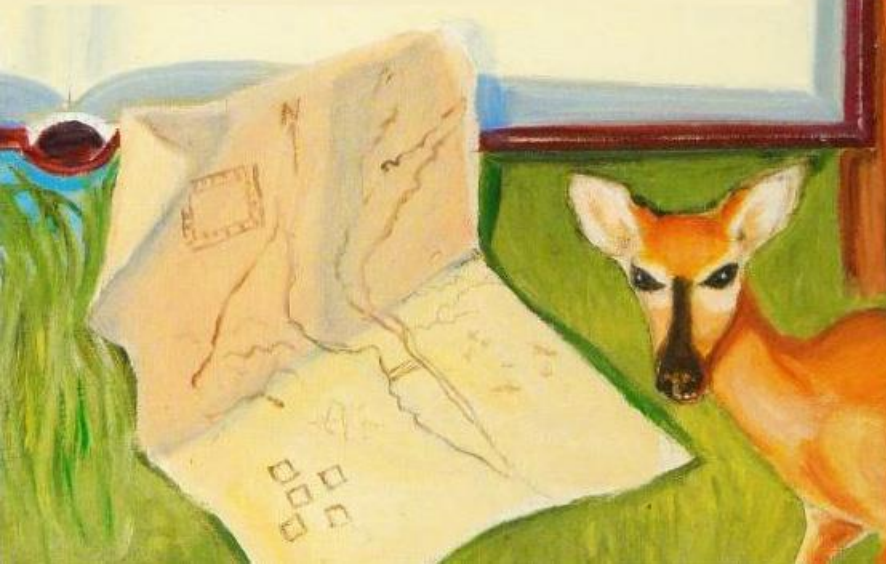
गुरुवार, अप्रैल 17, 1834

हनी फ्लावर नाम की एक इंडियन महिला है जिसे क्लेरिसा बहुत पसंद है. हनी फ्लावर का घर अब क्लेरिसा का घर बन गया है, और वो मेरी बहन को अपने परिवार का हिस्सा मानती है. पर मुझे लगता है कि पापा को वो पसंद नहीं है. लेकिन क्लेरिसा को वो पसंद है. और उसके लिए वो बहुत मायने रखता है.

क्लेरिसा कहती हैं, "हनी फ्लावर ने अपनी बेटी को बचपन में ही खो दिया था. मैंने उसे बताया कि जिस दिन मैं पैदा हुई उसी दिन मेरी माँ की मृत्यु हो गई थी.''

"पर तुम दोनों एक-साथ कैसे बात करती हो?" मैंने क्लेरिसा से पूछा. "क्योंकि तुम दोनों, अलग-अलग भाषाएँ बोलती होगी." कभी-कभी उस लड़की की बातों का मतलब समझना मुश्किल होता था.

"कई बार लोग बिना शब्दों के भी, एक दूसरे से बातें कर सकते हैं." क्लेरिसा ने कहा.
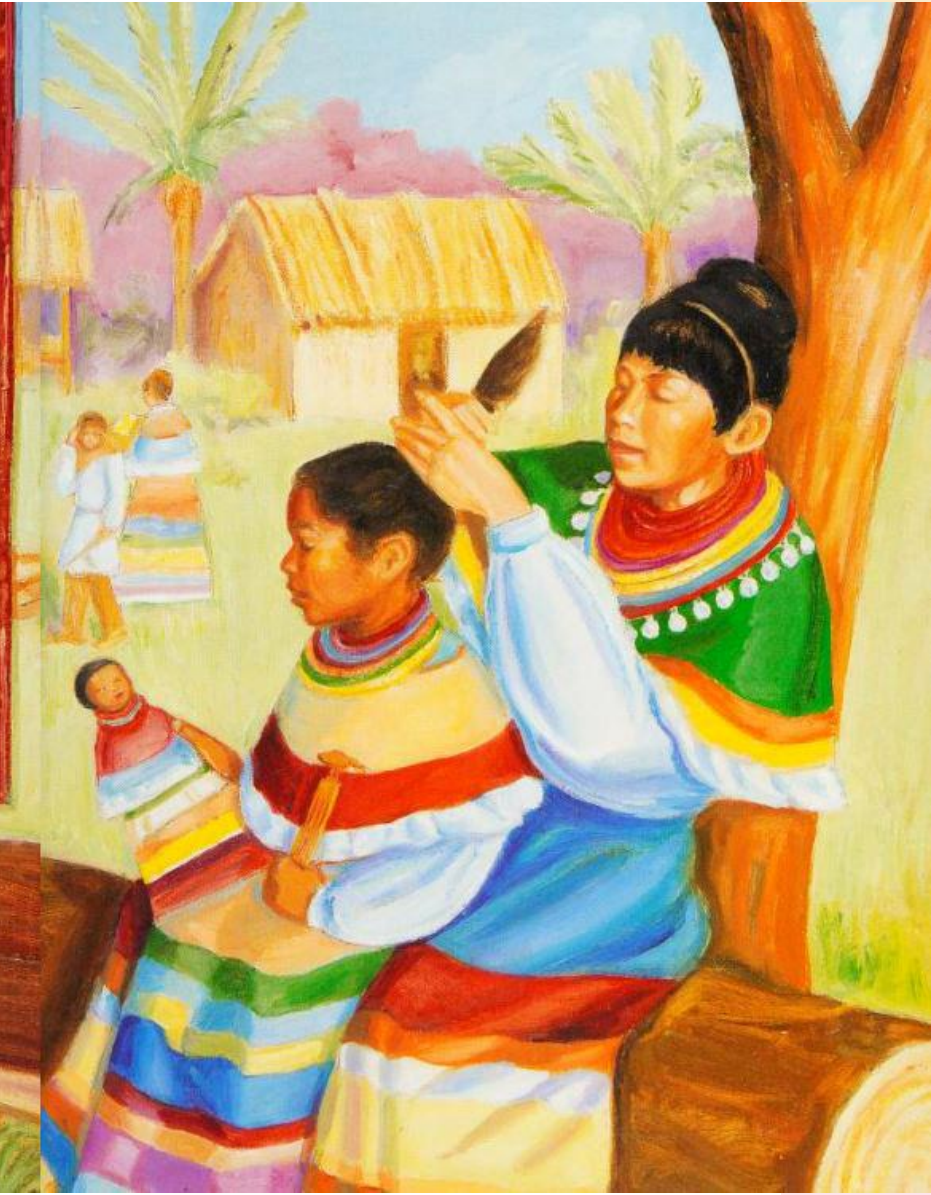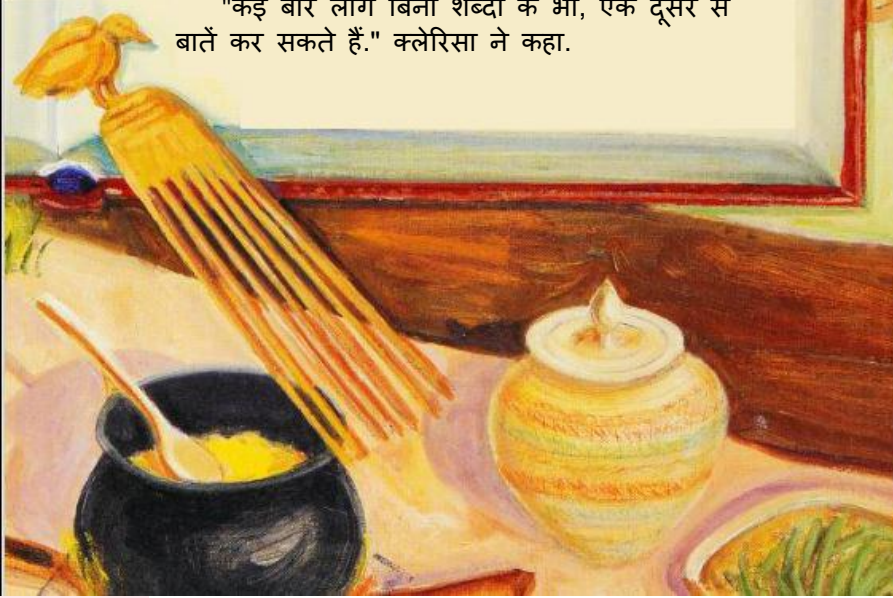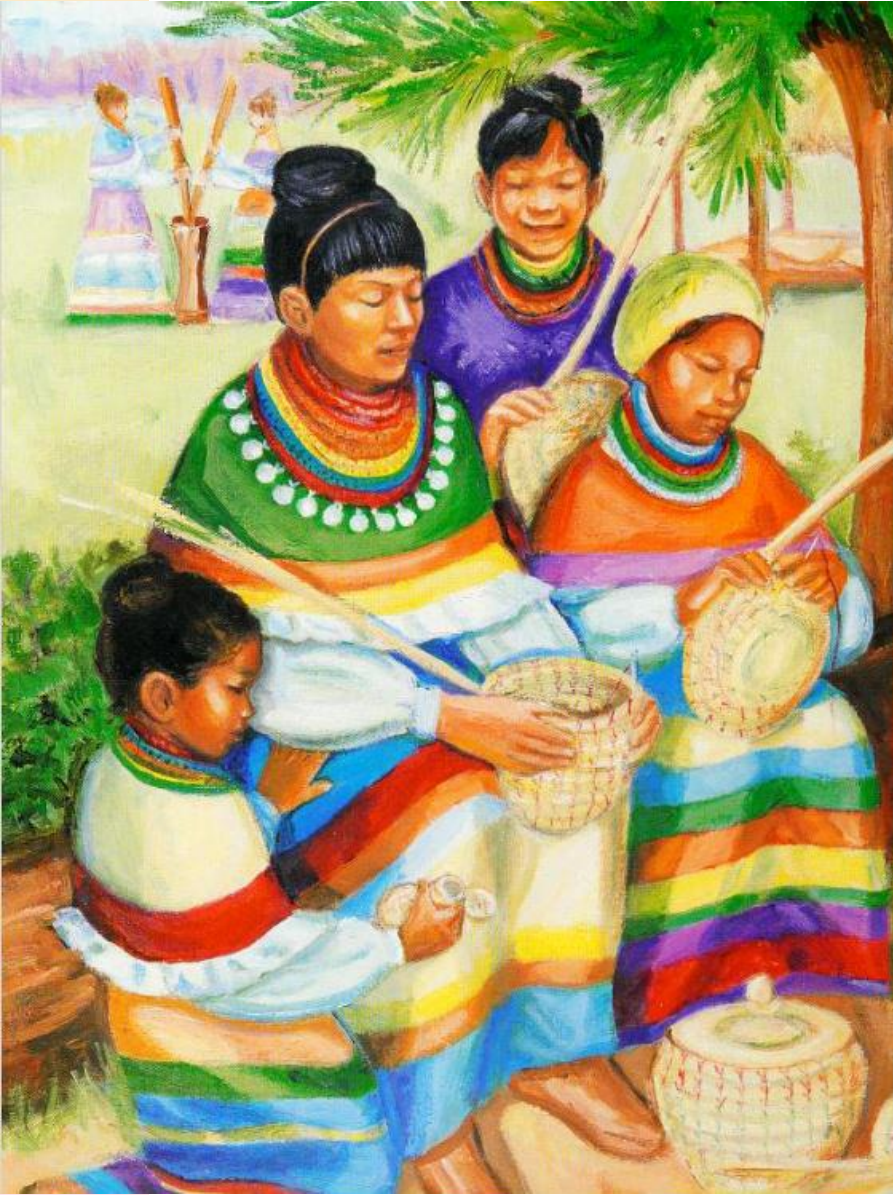
सोमवार, 19 मई, 1834

क्लेरिसा अब वैसी नहीं रही जैसी वो पहले थी. वो अब इंडियन थी. वो अब उनके कपड़े, उनके गले के मोती और उनके विशेष वस्त्र - मोकासिन पहनती थी. वो लड़की अब गुलाम नहीं रही थी.

लेकिन फिर, मैं भी गुलाम नहीं हूं. मैं भी क्लेरिसा के साथ, हनी फ्लावर के घुटने पर बैठती हूं और उसकी भाषा बोलना सीखती हूं और मैं भी एक सेमिनोल महिला की तरह ही सांस लेती हूं.

अन्य गुलामों ने भी वहीं अपना घर बना लिया. हम मकई, कपास और शकरकंदी की फसलें उगाते हैं, और सूअर, गाय और मुर्गियाँ पालते हैं. हम इंडियंस की तरह कोंटी की रोटी खाते हैं और बिल्कुल उन्हीं की तरह बने घरों में रहते हैं. हमारा जीवन अब प्लांटेशन के जीवन से बहुत अलग है. पर लगता है यह खुशी ज़्यादा देर तक नहीं टिकेगी.

शनिवार, 14 जून, 1834

क्लेरिसा फसल में मदद करने के लिए एक इंडियन लड़के को लाई. हनी फ्लावर ने उससे कहा, "खेतों की देखभाल करना महिलाओं का काम है. लेकिन पुरुष कटाई में मदद करते हैं." भगवान का शुक्र है, कि पापा तब हमारे पास नहीं थे. वो अब अपना अधिकतर समय इंडियंस का कारोबार देखने में बिताते थे.

वाइल्ड जम्पर नाम का इंडियन लड़का लगभग मेरी ही उम्र का है. वो एक योद्धा है—उसने मुझे बताया. और जब हम आराम करते और अकेले होते हैं, तो वो मुझे बहुत सी बातें बताता है. लेकिन फिर कभी-कभी वो एक ऐसे सन्नाटे में खो जाता है जो किसी कब्र के अंधेरे जैसा होता है. क्या यह मजाकिया नहीं है? जब से हम सेमिनोल लोगों के साथ रह रहे हैं तब से मैंने केवल हंसना ही सीखा है. लेकिन सेमिनोल लड़कों के पास हंसी-मज़ाक के लिए समय नहीं होता है. उन्हें पुरुष जो बनना होता है.
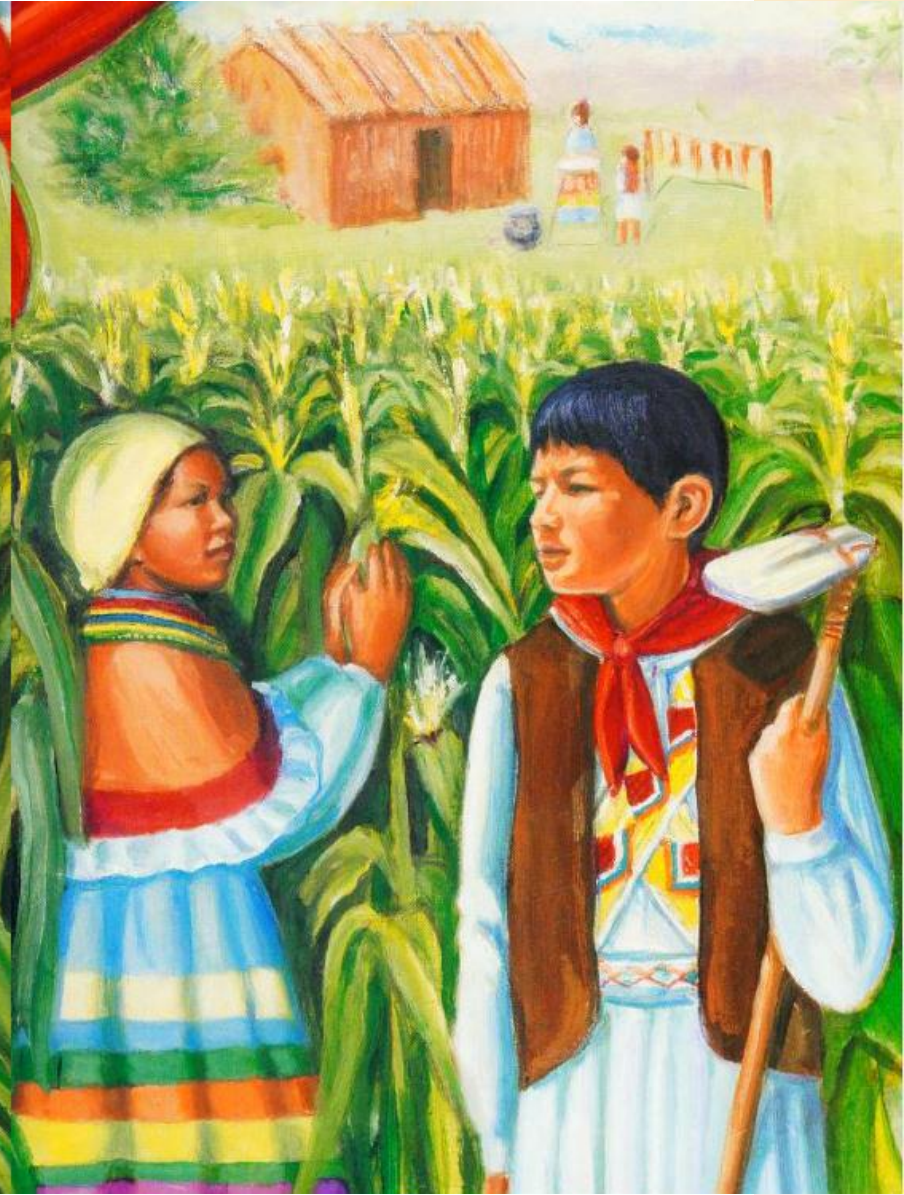
बुधवार, 25 जून, 1834

क्लेरिसा अब ज्यादा नहीं आती है. और जब वो आती है, तो वो इस बात पर ज़ोर देती है कि हम उसे "स्विफ्ट स्पैरो" के नाम से बुलाएं. पापा उसे नए नाम से नहीं बुला सकते क्योंकि क्लेरिसा मेरी माँ का नाम था.

आखिरकार जब मैंने क्लेरिसा को एक दिन अकेले देखा तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे हनी फ्लावर से दूर ले गई. मैंने नाटक किया कि मुझे अपने चित्रों के रंगों के लिए पौधों और फलों की खोज करने के लिए उसकी मदद चाहिए थी. तब क्लारिसा बैठी तब वो अपनी गुड़िया के साथ खेलती रही, जबकि मैं अपनी छोटी इंडियन बहन की तस्वीरें बनाती रही. लेकिन हमारे बीच चीजें अब पहले जैसी नहीं थीं. ऐसा लगता था कि उसे मेरे साथ अच्छा नहीं लगता था. इसलिए मैंने उसे जाने दिया.
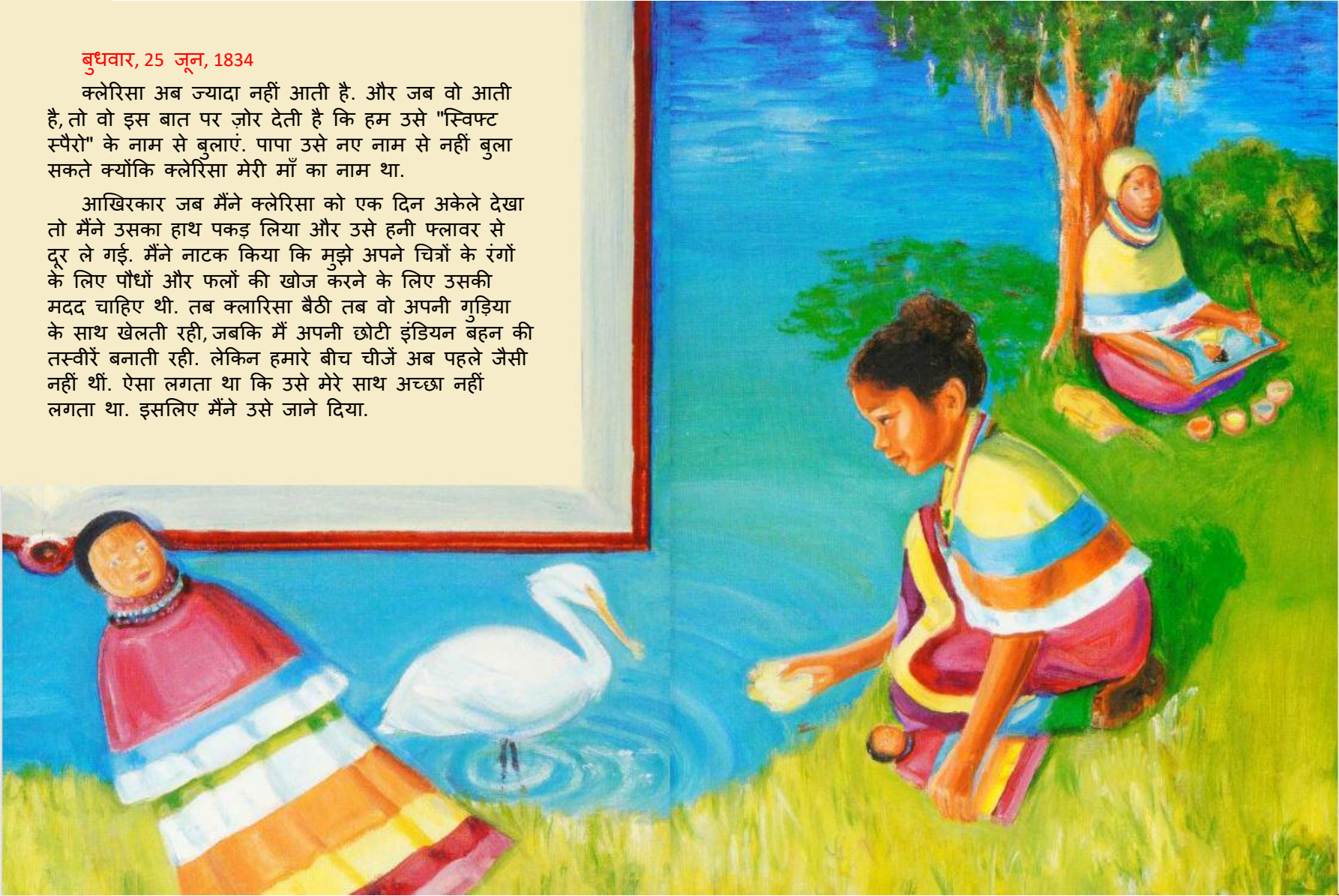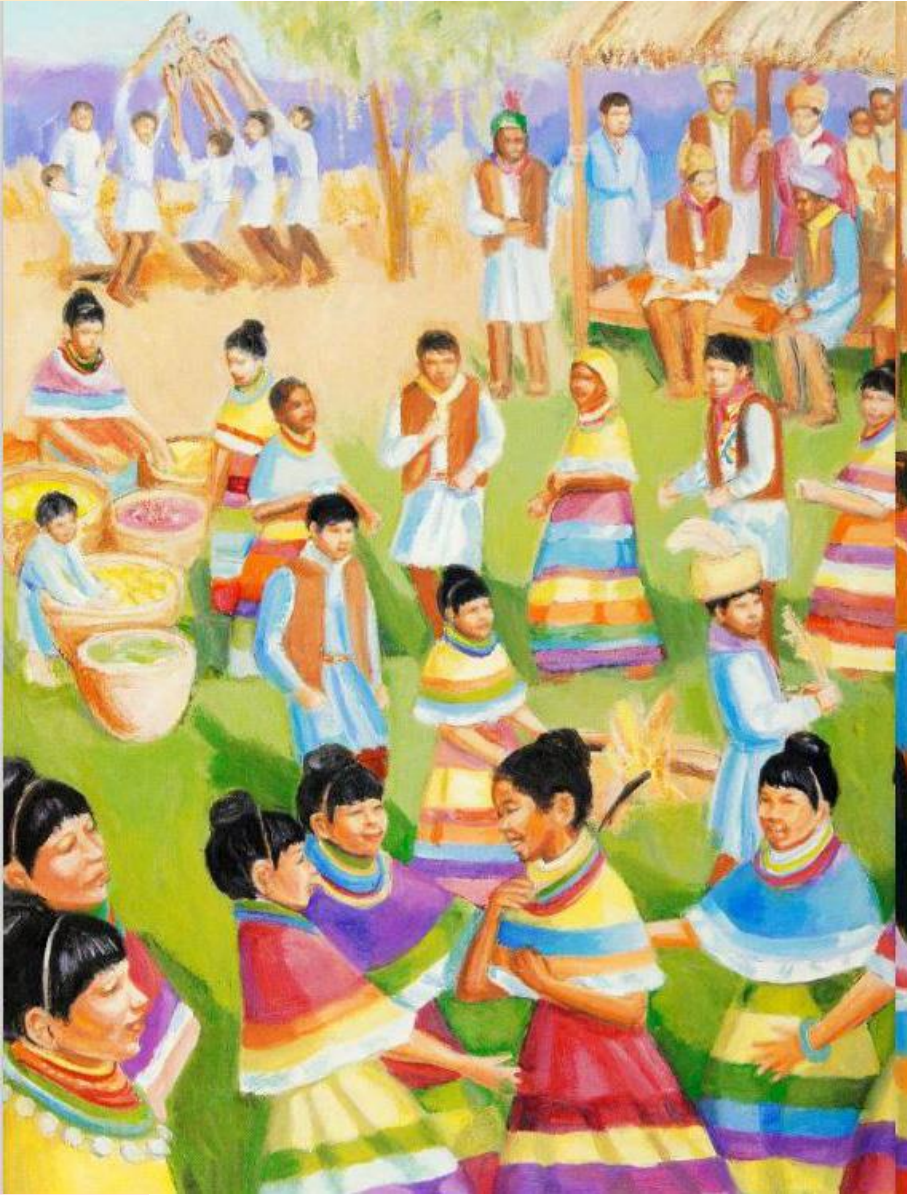
शुक्रवार, 27 जून, 1834

जंगली जम्पर और मैं खेतों में खड़े थे, यह देखने के लिए कि मकई पकी थी या नहीं. मैंने मकई को एक डंठल से तोड़ा जबकि वाइल्ड जम्पर ने मकई के पत्तों को छीला. "तुम उसे खा नहीं सकती हो," उसने मुझसे कहा. "क्यों नहीं?" मैंने पूछा. मुझे बहुत भूख लगी थी. वाइल्ड जम्पर ने कहा, "हमारे यहाँ दवा देने वाला ओझा ही यह तय करता है कि मकई कब खाई जा सकती है. जश्न मनाने के लिए, हम लोग मकई नृत्य करते है. तब हम सब उस महान आत्मा का धन्यवाद देते हैं जिसने हमें यह सब कुछ दिया है."

शनिवार, 5 जुलाई, 1834

मकई नृत्य की यादें हमेशा मेरे साथ रहेंगी. वो त्यौहार चार दिनों तक चला, और वो थैंक्सगिविंग और क्रिसमस की तरह ही था. क्लेरिसा हँसी और खेली, और उसने सभी चीज़ों में भाग लिया.

नई मकई और आग पर भुने मांस को खाने से पहले हमने महान आत्मा को धन्यवाद दिया. हमने बॉल गेम खेले, वाइल्ड जम्पर और मैंने डांस किया. जीवन में इतना आनंद मैंने पहले कभी नहीं अनुभव किया था.

यहाँ तक कि पापा ने भी खूब मज़ा किया - फिर अंत में वे बड़ों से साथ चर्चा में शामिल हो गए. वे सभी एक ही बात कर रहे थे कि कैसे अमेरिकी सरकार हमें यहां हमारे घरों से निष्कासित करके ओकलाहोमा के इलाके में एक आरक्षित क्षेत्र में बसने के लिए मजबूर कर रही थी. पापा के अनुसार वही यह एकमात्र तरीका था जिससे सेमिनोल लोग हमें गुलाम रख सकते थे. लेकिन अगर हम यहाँ से चले गए तो हमारा जीवन कभी पहले जैसा नहीं रहेगा.
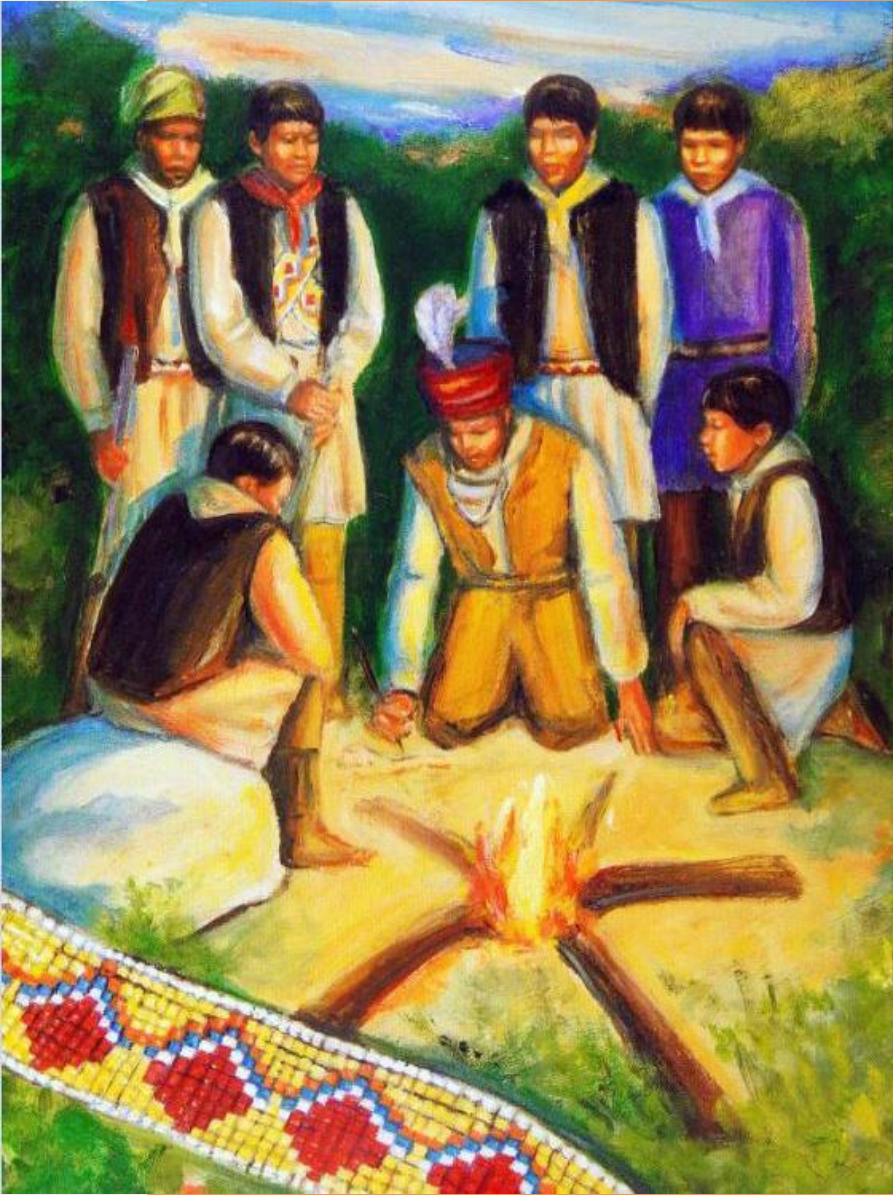
गुरुवार, नवंबर 13, 1834

प्राकृतिक रंगों की तलाश में मैं अपनी बस्ती से बहुत दूर चली गई. लेकिन असल में मैं वाइल्ड जम्पर की तलाश में थी. मैंने उसे मकई नृत्य के बाद से नहीं देखा और मुझे उसके बारे में चिंता थी. आखिरी बार मैंने उसे देखा था तब वो योद्धाओं के एक समूह में शामिल हो गया था. उन्होंने बाकी बड़े-बूढ़ों और विशेषकर मेरे पिता के फैसले पर सवाल उठाए थे. "हम ओक्लाहोमा नामक किसी क्षेत्र में क्यों जायें, जब यहाँ की ज़मीन वास्तव में हमारी भूमि है?"
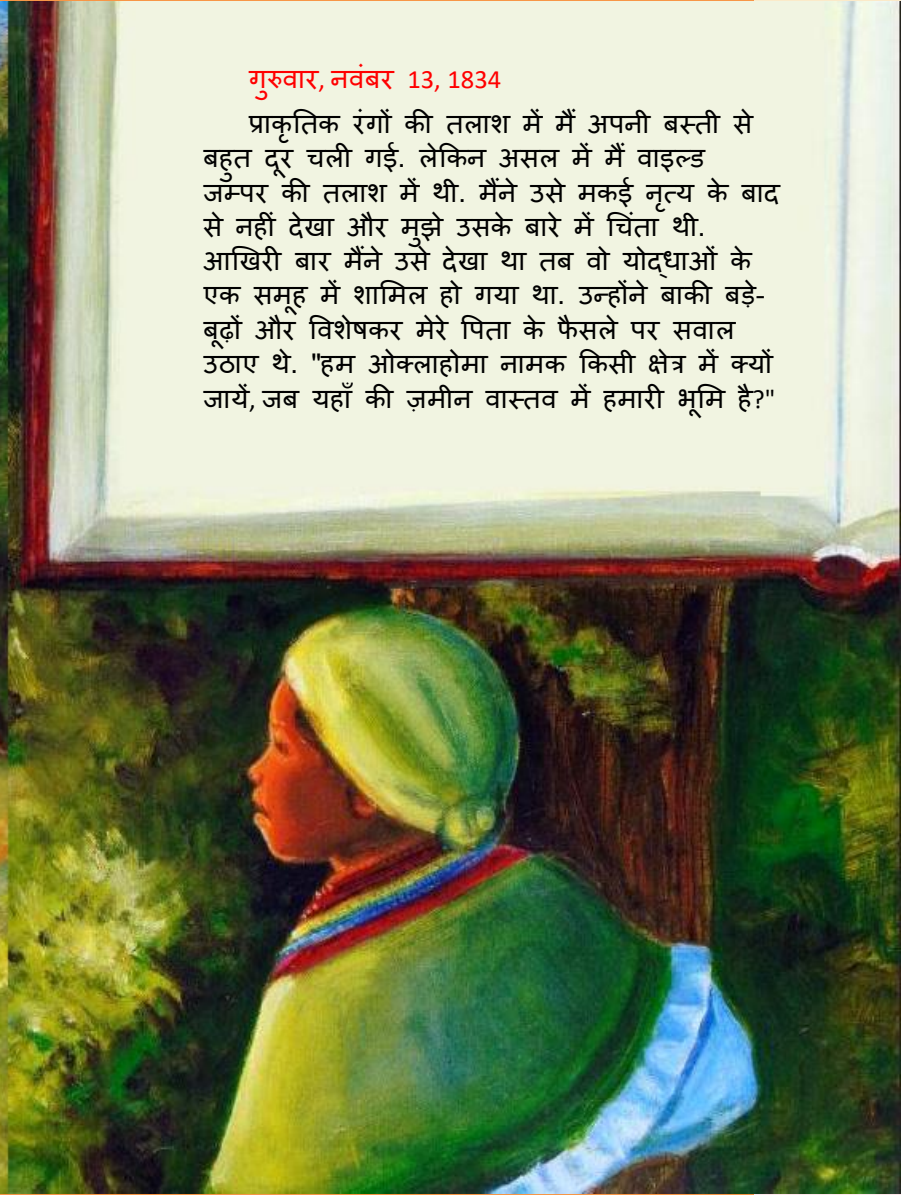
शुक्रवार, 19 जून, 1835

बहुत ज्यादा हंगामा. बहुत कुछ हो रहा है. सभी काले लोग अब इस बारे में बात कर रहे हैं कि क्या हमें ओक्लाहोमा जाना चाहिए या हमें यहीं रहना चाहिए. क्या हम गुलाम लोग, ओक्लाहोमा में सेमिनोल लोगों के साथ रह पाएंगे या हमें फिर से पिटने, जंजीर में जकड़ने और दुर्व्यवहार करने के लिए दुबारा बागानों में लौटा दिया जाएगा.

लेकिन पापा एक बार जो मन बना लेते हैं वो उस पर अड़े रहते हैं. उन्हें ओक्लाहोमा ही एकमात्र रास्ता लगता है. वे कहते, "देखो जल्द ही संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना अपनी राइफलों के साथ, हमें इस भूमि से खदेड़ने के लिए यहाँ आएगी." पापा ने आज शाम मुझसे कहा: "केवल वही पैक करना जो हम ले जा सकते हों, और किसी भी दिन जाने के लिए तैयार रहना. और अपनी बहन को भी लाना, क्योंकि वो भी हमारे साथ चलेगी." मुझे यकीन था कि उन्होंने मुझ से मेरी बहन को लाने के लिए इसलिए कहा था क्योंकि पापा मेरी बहिन की "न" को सहन नहीं कर पाते.

शनिवार, 20 जून, 1835

मैं क्लेरिसा को खोजने के लिए हनी फ्लावर के घर गई. लेकिन मुझे बताया गया कि वो टोकरियां बनाने की घास इकट्ठा करने के लिए बाहर गई थी. जब मैं उसकी तलाशी करने निकली तब हनी फ्लावर ने मेरी बांह पकड़ ली. "उसे जाने दो, लिब्बी. उसे मेरे पास छोड़ दो." मैं चौंक गई. वो अपने मुंह से उन शब्दों को कैसे कह सकती थी. आखिर क्लेरिसा मेरी बहन - मेरा परिवार - मेरा ख़ून थी. "तुम्हारे पिता गलत हैं. स्विफ्ट स्पैरो, ओक्लाहोमा में कभी भी आज़ाद नहीं रहेगी ... तुम भी नहीं ... मैं भी नहीं."

अब मैं और क्या कह सकती थी?

रविवार, 21 जून, 1835

मैं और पापा क्लेरिसा को लेने गए. लेकिन तब तक क्लेरिसा चली गई थी. हनी फ्लावर भी चली गई थी. उसका पति भी चला गया था. और मेरा दोस्त भी. एक बूढ़ी औरत ने हमें बताया कि अधिकांश बस्तियां, दक्षिण फ्लोरिडा के दलदलों में भाग गई थीं ताकि वे उस जमीन पर रह सकें जिसे गोरे लोग कभी नहीं चाहेंगे.

मैं जंगली जम्पर की आखिरी बार खोज करने के लिए रोते हुए भागी, भले ही मैं अपने दिल में जानती थी कि वो भी चला गया होगा. वो योद्धाओं के उस दल में शामिल हो गया, जिन्होंने अपनी ज़मीन के लिए लड़ने की कसम खाई थी. वे भला अमेरिकी सेना से लड़कर कैसे बच सकते थे. और जब वे बच जाते मुझे पता नहीं कि किसका दिल ज्यादा टूटता - पापा का, या मेरा.

सोमवार, 22 जून, 1835

कुछ ही क्षणों में, पापा, चीफ रनिंग टाइगर, साठ अन्य इंडियंस और गुलाम, और मैं संयुक्त राज्य की सेना के सशस्त्र गार्ड की रखवाली में, ओक्लाहोमा क्षेत्र के लिए रवाना हुए.

मैं शायद अपनी छोटी बहन या वाइल्ड जम्पर को फिर कभी नहीं देख पाऊंगी. इससे ज़्यादा मैं और कुछ नहीं कह सकती हूँ.
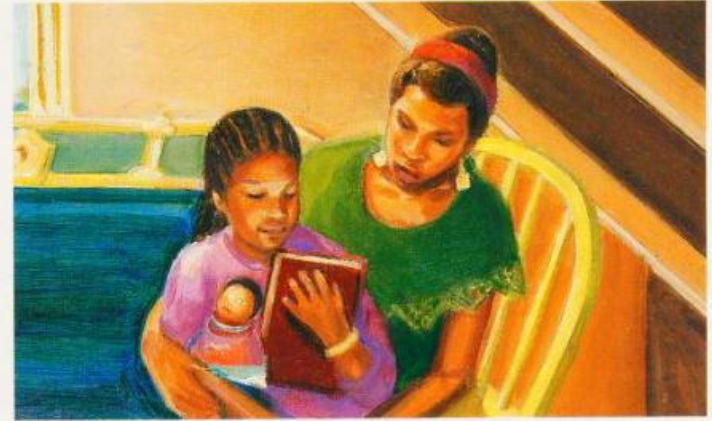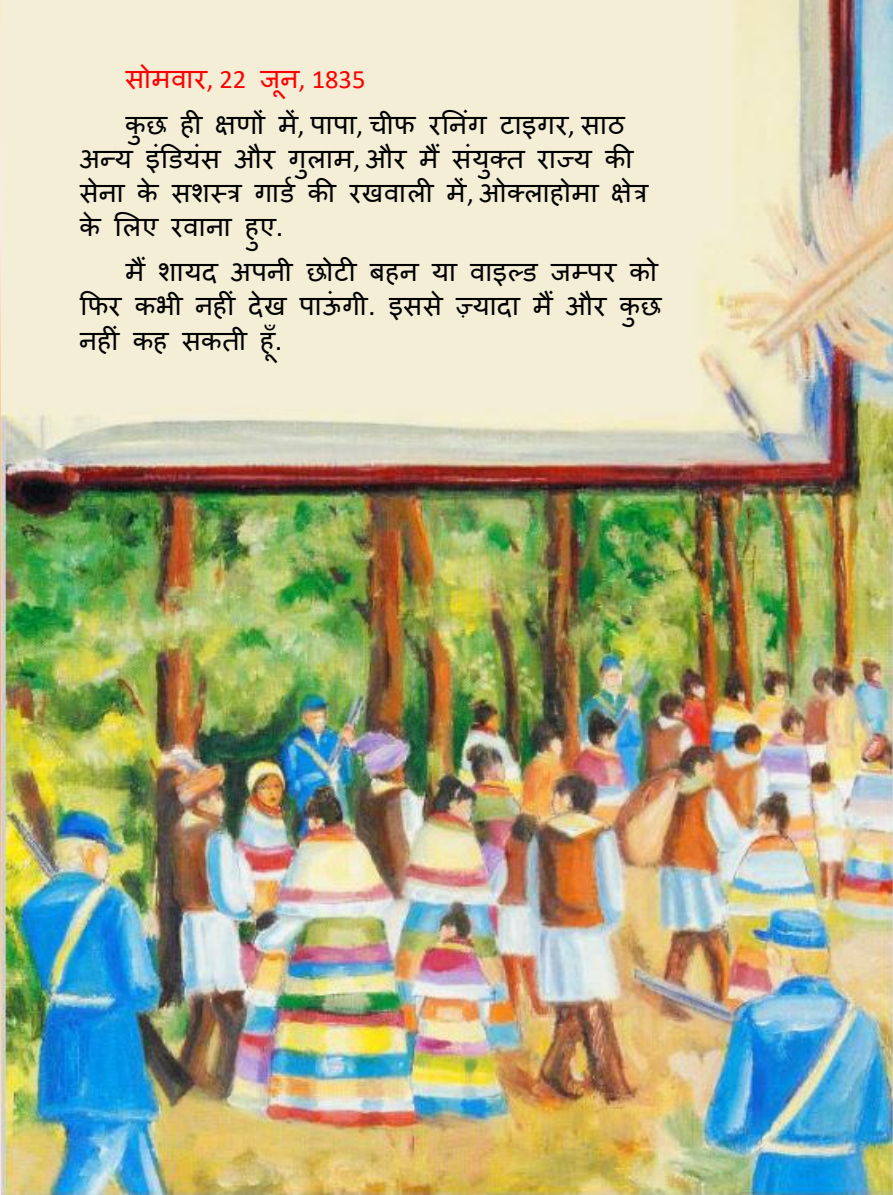
जीना की माँ ने किताब बंद कर दी. फिर जीना ने उनके पैरों के पास पड़े चित्रों और अन्य वस्तुओं को गौर से देखा.

“फिर उन लोगों का क्या हुआ, माँ? क्या उनके लिए सब कुछ ठीक रहा?"

"यह जानना मुश्किल है, जीना. पर इतिहास की किताबों से हमें पता चलता है कि अधिकांश सेमिनोल और उनके काले दासों को जबरन वहां से ले जाया गया और उन्हें ओक्लाहोमा में जिसे इंडियन क्षेत्र कहा जाता था, वहां छोड़ दिया गया. लेकिन वहां उनका जीवन उतना शांतिपूर्ण नहीं था जितना कि फ्लोरिडा में था. वहाँ अक्सर अन्य इंडियन जनजातियों के साथ, उनके संघर्ष होते थे जो सेमिनोल जनजाति के ऐतिहासिक दुश्मन थे. अक्सर समस्याएं पैदा होती थीं क्योंकि बाकी इंडियंस के साथ-साथ दक्षिणी गोरे भी, गुलामों और सेमिनोलों के बीच साझा भाईचारे के संबंधों का विरोध करते थे.

"अच्छा फिर जंगली जम्पर, का क्या हुआ, माँ?" जीना ने पूछा.

मैं उसके बारे में पक्के तौर पर कुछ नहीं कह सकती हूँ. लिब्बी की डायरी हमारे पास है. लेकिन मुझे इतना पता है कि 1835 से 1842 के वर्षों के दौरान संयुक्त राज्य के सैनिकों और मूल अमेरिकियों के बीच सबसे बड़ा संघर्ष हुआ और वो "द्वितीय सेमिनोल युद्ध" के नाम से जाना जाता है. उन्होंने कई लड़ाइयाँ जीतीं और हारीं क्योंकि कई सेमिनोल और अश्वेत योद्धाओं ने, अपनी भूमि पर रहने और उसके लिए लड़ने की कसम खाई थी."

जीना फुसफुसाई, "माँ, फिर क्लेरिसा का क्या हुआ?"

"वो हनी फ्लावर के परिवार के साथ दक्षिण फ्लोरिडा के एवरग्लेड्स में भाग गई. उनके कई वंशज आज भी, मियामी के पास कुछ सेमिनोल आरक्षित क्षेत्रों में रहते हैं."

"मियामी? क्या मियामी में हमारा कोई परिवार नहीं है?"

"अफ्रीकी-अमेरिकियों के, पूरी दुनिया भर में परिवार हैं. जहां कहीं भी लोग मुक्त होकर रहने की इच्छा रखते हैं, जहां भी लोग स्वतंत्र होने के लिए अपना जीवन देने को तैयार होते हैं, उन सभी स्थानों पर हमारे परिवार हैं."

अंत